आरती एवं वन्दना

आरती गणेशजी की

जय गणेश, जय गणेश जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूषे की सवारी।। जय गणेश ....।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय गणेश ....।।
लड्डुन का भोग लगे, सन्त करें सेवा। हार चढ़ें, फूल चढ़ें और चढ़े मेवा।। जय गणेश ....।।
दीनन की लाज रखो शम्भु–सुत वारी। कामना को पूर्ण करो जग बलिहारी।। जय गणेश ....।।

आरती श्रीरामचन्द्रजी की

जगमग जगमग जोत जली है। राम आरती होन लगी है।।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती। आरती संत करें दिन राती।।
आनन्द की सरिता उभरी है। जगमग जगमग जोत जली है।।
कनक सिंहासन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता।।
वाम भाग में जनक लली है। जगमग जगमग जोत जली है।।
आरती हनुमत के मन भावे। राम कथा नित शंकर गावे।।
सन्तों की ये भीड़ लगी है। जगमग जगमग जोत जली है।।

आरती श्रीरामायणजी की

आरति श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की।। आरति श्री ....
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिशारद।।
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।। आरति श्री ....
गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की। आरति श्री ....
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।। आरति श्री ....
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की।। आरति श्री ....

आरती भगवान जगदीश्वर की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ जय ...।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।। स्वामी ...।।
सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ जय ...।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।। स्वामी ...।।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ॐ जय ...।।
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।। स्वामी ...।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ जय ...।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।। स्वामी ...।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। ॐ जय ...।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पती।। स्वामी ...।।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती।। ॐ जय ...।।
दीनबन्धु दुख हरता, तुम ठाकुर मेरे।। स्वामी ...।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ जय ...।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। स्वामी ...।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ जय ...।।
तन, मन, धन, सब कुछ है तेरा।। स्वामी ...।।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। ॐ जय ...।।
श्यामसुन्दरजी की आरति जो कोई नित गावे।। स्वामी ...।।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।। ॐ जय ...।।

आरती सरस्वतीजी की

शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।
जय सरस्वती ज्ञानदायिनी,
कमल हंस विराजिनी।

शारदे जय हंसवाहिनी,
ऋद्धि सिद्धि विवेकदायिनी,
कुमति शूल विनाशनी।
देवी मंद सुहास वर्षनी,
हृदय हंस विराजिनी।
शारदे जय हंसवाहिनी,
मधुर काव्य कला,
प्रणव नाद विकासिनी।
भगवती संगीत वर दे,
भुवन मानस वासिनी।

शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।

आरती शिवजी की

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि।।

जय शिव ओंकारा प्रभु हर शिव ओंकारा, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा। ॐ हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे। ॐ हर हर महादेव।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज ते सोहे, तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे। ॐ हर हर महादेव।।
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी, चंदन मृगमद सोहे भोले शुभकारी। ॐ हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे, सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे। ॐ हर हर महादेव।।
लक्ष्मी बर गायत्री, पारवती संगे, अरधंगे अरु शिरभंगे, सिर सोहत गंगे। ॐ हर हर महादेव।।
करके मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, सुखकारी दुखहारी जग पालन कारी। ॐ हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका। ॐ हर हर महादेव।।
त्रिगुणस्वामी की आरती जो कोई नित गावे, कहत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावे। ॐ हर हर महादेव।।

आरती श्रीहनुमानजी की

आरती कीजे हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग–दोष जाके निकट न झांके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जमकारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा।। आरती ...

आरती सत्यनारायणजी की

ॐ जय श्री लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन–पातक–हरणा।। ॐ जय ...
रत्न जटित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजे।। ॐ जय ...
प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो।। ॐ जय. ...
दुर्बल भील कराल, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, तिनकी विपति हरी।। ॐ जय ...
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं।। ॐ जय ...
भाव–भक्ति के कारण, छिन–छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सरयो।। ॐ जय ...
ग्वाल–बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी।। ॐ जय ...
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।। ॐ जय ...
श्री सत्यनारायणजी की, आरती जो कोई नित गावे।
भगतदास मनवांछित सुखसम्पत्ति पावे।। ॐ जय ...

आरती अम्बेजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।। ॐ जय अम्बे ...
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको।। ॐ जय अम्बे ...
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।। ॐ जय अम्बे ...
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी।। ॐ जय अम्बे ...
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती।। ॐ जय अम्बे ...
शुम्भ–निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती।। ॐ जय अम्बे ...
चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु–कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। ॐ जय अम्बे ...
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम–निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। ॐ जय अम्बे ...
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। ॐ जय अम्बे ...
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता।। ॐ जय अम्बे ...
भुजा चार अति शोभित, वर–मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी।। ॐ जय अम्बे ...
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती।। ॐ जय अम्बे ...
माँ अम्बे की आरति, जो कोई नित गावे। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख–सम्पत्ति पावे।। ॐ जय अम्बे ...

श्री रामचन्द्रजी की स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।
नव कंज लोचन, कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जिति खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम्।।
मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि–पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

आरती कुंजबिहारीजी की

आरती कुंज बिहारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला।
नन्द के आनन्द, मोहन बृजचन्द, परमानन्द, राधिका रमण बिहारी की।। आरती कुंज ...

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की।। आरती कुंज ...

कनकमय मोर मुकुट विलसें, देवता दर्शन को तरसें।
गगन से सुमन बहुत बरसें, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल छवि गोप कुमारी की।। आरती कुंज ...

जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी गंगा,
स्मरण से होत मोह भंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच,
हरै अघ कीच, चरण छवि श्री बनवारी की।। आरती कुंज ...

चमकती उज्ज्वल तट रेणू, बाजती वृन्दावन वेणू।
चहुँ दिशि गोप ग्वाल धेनू, हंसत मृदुमन्द, चांदनी चन्द।
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन दुखारी की।। आरती कुंज ...

आरती लक्ष्मीजी की

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता।। जय लक्ष्मी ...
उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग माता,
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता। जय लक्ष्मी ...
दुर्गा रूप निरंजन सुख संपति दाता,
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि सिद्धि पाता। जय लक्ष्मी ...
तू ही है पाताल बसंती तू ही है शुभ दाता,
कर्म प्रभाव प्रकाशक भवनिधि की त्राता। जय लक्ष्मी ...
जिस घर में तुम रहतीं सब सद्‌गुण आता,
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबड़ाता। जय लक्ष्मी ...
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोइ पाता,
खान पान को वैभव सब तुम से आता। जय लक्ष्मी ...
शुभ गुण सुन्दर मुक्ता क्षीरो निधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता। जय लक्ष्मी ...
श्रीलक्ष्मीजी की आरती जो कोई नित गाता,
उर आनन्द समाता पाप उतर जाता। जय लक्ष्मी ...

आरती श्रीराम की

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ
आरती उतारूँ मैं तो तन मन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

कनक सिंहासन राजत जोरी–दसरथ नन्दन जनक किशोरी।
युगल छवी को सदा निहारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

वाम भाग शोभित जग जननी–चरण विराजत हैं सुत अंजनी।
इन चरणों में जीवन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

चरणों से निकली गंगा प्यारी– पावन करती है दुनियाँ सारी।।
इन चरणों को सदा पखारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

आरति हनुमत के मन भावै–रामकथा नित शिवजी गावै।
मैं सुन सुन निज जनम संवारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

आरती अवध विहारी की

आरती अवध विहारी की, लखन सिया जनक दुलारी की।

शीश पर क्रीट मुकुट सोहे। चंद्रिका की छवि मन मोहे।।
लखन सेवा बलिहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

कपोलन पै अलकैं झलकें। अधर पै बिजली सी चमके।।
छवि कजरारे नयनन की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

अंग सब ज्यों निर्मल नीरा। भरत रिपुदलन महावीरा।।
चरण सेवा धनुधारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

जिए जुग श्यामलता जोरी। भजो रे मन सब माया तोरी।।
दरस हित युगल विहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

वंदना

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चितलाय। वहाँ प्रभु वासा करें, स्वर्ग लोक से आय।।
कथा सदा होती रहे, सुनो वीर हनुमान। राम लखन सीता सहित, सदा करो कल्यान।।
बार बार वर माँगहुं, राम कृपा कर देहुं। जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुं घटे जनि नेहु।।
देवता सब आश्रम गये, शम्भु गये कैलाश। श्रोता–वक्ता जायेंगे, हरि सुमिरन की आस।।
मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर। अस विचार रघुवंश मनि, हरहु विषम भव भीर।।
हम तो कुछ जाने नहीं, तुम जानों रघुनाथ। सेवा पूजा वन्दना, सबहि तुम्हारे हाथ।।
पुष्पांजलि अर्पण करूं, ग्रहण करो महाराज। कृपा दृष्टि अवलोकिए, शरण पड़े की लाज।।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।
ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्या कुमारी च धीमहि तन्नो दुर्गे प्रचोदयात्।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।
ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
ॐ वासुदेवाय विद्महे राधाबल्लभाय धीमहि तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।
ॐ दशरथाय विद्महे सीताबल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।
ॐ रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत प्रचोदयात्।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्ण मेवावशिष्यते।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वरः। यत्पूजितं मया देव! परिपूर्ण तदस्तु मे।

श्रीरामचरितमानस पाठ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री

नारियल–1		पंच मेवा	50 ग्राम
लाल कपड़ा		देशी घी	1 कि.ग्रा.
कंद		गोला साबुत *	1
सुपारी–11+10 *		मिश्री	200 ग्राम
धूपबत्ती		सौंफ	100 ग्राम
अगरबत्ती		काली मिर्च	10 ग्राम
कलावा		गंगाजल	
रोली		फल (ऋतु फल)	5 तरह के
कपूर (डली का)		दूर्वा	
इलायची	10 ग्राम	तुलसी के पत्ते	
लौंग	10 ग्राम	रूई	
पंचरंगा *		पान साबुत	5
हवन सामग्री *	1 कि.ग्रा.	फूल हार	7
काले तिल *	50 ग्राम	आम के पत्ते	
इन्द्र जौ *	25 ग्राम	हवन के लिए लकड़ी *	5 कि.ग्रा.
जौ *	50 ग्राम	(आम / आक / ढाक की)	
बेलगिरी *	250 ग्राम	कलश	1
अगर *	25 ग्राम	थाली	4
तगर *	25 ग्राम	लोटा	2
नागर मौथा *	25 ग्राम	चम्मच	2
कपूर कचरी *	25 ग्राम	माचिस	2
चन्दन चूरा *	25 ग्राम	आसन	2
धाय के फूल *	25 ग्राम	कटोरी	4
कच्ची खांड *	250 ग्राम	आटा	50 ग्राम
चावल	250 ग्राम	हल्दी	50 ग्राम

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति, घर परिवार में अमन चैन तथा जीवन का परम लक्ष्य भगवत्प्राप्ति हेतु रामायण/सुंदरकाण्ड पाठ के आयोजन हेतु हमें संपर्क कर सकते हैं -

सम्पर्क सूत्र- 0120-4305457 एवं 9811056467

यदि यज्ञ न कराना हो तो यह सामग्री आवश्यक नहीं है।